विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग- दशम्, विषय- हिंदी

दिनांक-11-11-2020

NCERT pattern

// अध्ययन -सामग्री ॥

कृतिका

पाठ -3

साना साना हाथ जोड़ि(यात्रा वृतांत)

लेखिका- मधु कांकरिया

सुप्रभात बच्चों,

कल की कक्षा में आपने पढ़ा कि लेखिका यूमथांग के लिए रवाना होती हैं, जहां रास्ते में गहरी घाटियां और फूलों से लदी वादियां देखने को मिल रही थी। जगह-जगह धूपी (गुग्गुल) पाइन(चीड़) पेड़ लगे हुए थे। थोड़ी दूर जाने पर जगह-जगह सफेद पताका फहरती नजर आई। यह पता काय सत्य और अहिंसा का प्रतीक मानी जाती हैं।

ऐसी मान्यता है कि बौद्ध मार्गी लोगों की जब मृत्यु होती है तो उनकी आत्मा की शांति के लिए किसी पवित्र स्थल पर 108 सफेद पताकाएं ह लहराई जाती हैं , जिससे उस मृत आत्मा को शांति मिले। कुछ और आगे जाने पर लेखिका को कवी लोंग स्टॉक ना मक जगह मिला जो दो कारणों से प्रसिद्ध था।

पहला कारण -वहां गाइड फिल्म की शूटिंग की गई थी इसलिए इस जगह को प्रसिद्धि मिल गई तथा दूसरा कारण - सिक्किम की लेपचा और भूटिया नामक दो स्थानीय जातियों के बीच चल रहे झगड़े को खत्म करने के लिए शांति वार्ता यही की गई थी। उसके बाद लेखिका ने एक प्रेयर व्हील देखा जिसके पीछे जो इस बिल को एक बार उसके सारे पाप धुल जाएंगे।

लेखिका के मस्तिष्क में यह विचार कौंधा कि तमाम प्रगति के बावजूद भी हमारी सोच विचार सदियों पहले जैसी बनी हुई है।

ऊंचाइयों पर चढ़ने पर लेखिका को हिमालय का भव्य रुप देखने को मिला।

हिमालय को जो व्यक्ति जिस सोच के साथ देखते हैं वह वैसा दिखता है ।दर्शकों को वह सुंदर दृश्य, पर्यटकों को प्रकृति के नजदीक आने का एक सुअवसर तथा तीर्थंकरों के लिए एक पवित्र स्थल की तरह ।

पल-पल परिवर्तित हिमालय - अर्थात जलवायु परिवर्तन तथा अन्य प्राकृतिक कारणों से हिमालय मैं निरंतर परिवर्तन चलता रहता है।

आज की कक्षा में पृष्ठ संख्या 20 21 को हम दे रहे हैं । आप इसे पर ही हम पंक्ति दर व्याख्या कल की कक्षा में करेंगे —

इस बिखरी असीम सुंदरता का मन पर यह प्रभाव पड़ा कि सभी सैलानी झूम-झूमकर गाने लगे-"सुहाना सफ़र और ये मौसम हँसी...।"

पर मैं मौन थी। किसी ऋषि की तरह शांत थी। मैं चाहती थी कि इस सारे परिदृश्य को अपने भीतर भर लूँ। पर मेरे भीतर कुछ बूँद-बूँद पिघलने लगा था। जीप की खिड़की से मुंडकी[6] निकाल-निकाल मैं कभी आसमान को छूते पर्वतों के शिखर देखती तो कभी ऊपर से दूध की धार की तरह झर-झर गिरते जल-प्रपातों को। तो कभी नीचे चिकने-चिकने गुलाबी पत्थरों के बीच इठला-इठला कर बहती, चाँदी की तरह कौंध मारती बनी-ठनी तिस्ता नदी को। सिलीगुड़ी से ही हमारे साथ थी यह तिस्ता नदी। पर यहाँ उसका सौंदर्य पराकाष्ठा पर था। इतनी खूबसूरत नदी मैंने पहली बार देखी थी। मैं रोमांचित थी। पुलकित थी। चिड़िया के पंखों की तरह हलकी थी।

"मेरे नगपति मेरे विशाल"-मैंने हिमालय को सलामी देनी चाही कि तभी जीप एक जगह रुकी...खूब ऊँचाई से पूरे वेग के साथ ऊपर शिखरों के भी शिखर से गिरता फेन उगलता झरना। इसका नाम था-'सेवन सिस्टर्स वॉटर फॉल।' फ़्लैश चमकने लगे। सभी सैलानी इन खूबसूरत लम्हों की रंगत को कैमरे में कैद करने में मशगूल[7] थे।

आदिम युग की किसी अभिशप्त[8] राजकुमारी-सी मैं भी नीचे बिखरे भारी-भरकम पत्थरों पर बैठ झरने के संगीत के साथ ही आत्मा का संगीत सुनने लगी। थोड़ी देर बाद ही बहती जलधारा में पाँव डुबोया तो भीतर तक भीग गई। मन काव्यमय हो उठा। सत्य और सौंदर्य को छूने लगा।

जीवन की अनंतता का प्रतीक वह झरना...उन अद्‌भुत-अनूठे क्षणों में मुझमें जीवन की शक्ति का अहसास हो रहा था। इस कदर प्रतीत हुआ कि जैसे मैं स्वयं भी देश और काल की सरहदों[9] से दूर बहती धारा बन बहने लगी हूँ। भीतर की सारी तामसिकताएँ[10] और दुष्ट वासनाएँ[11] इस निर्मल धारा में बह गईं। मन हुआ कि अनंत समय तक ऐसे ही बहती रहूँ...सुनती रहूँ इस झरने की पुकार को। पर जितेन मुझे ठेलने लगा...आगे इससे भी सुंदर नज़ारे मिलेंगे।

अनमनी-सी मैं उठी। थोड़ी देर बाद ही फिर वही नज़ारे-आँखों और आत्मा को सुख देने वाले। कहीं चटक हरे रंग का मोटा कालीन ओढ़े तो कहीं हलका पीलापन लिए, तो कहीं पलस्तर उखड़ी दीवार की तरह पथरीला और देखते ही देखते परिदृश्य से सब छू-मंतर...जैसे किसी ने जादू की छड़ी घुमा दी हो। सब पर बादलों की एक मोटी चादर। सब कुछ बादलमय।

6. सिर 7. व्यस्त 8. शापित, अभियुक्त 9. सीमा 10. तमोगुण से युक्त, कुटिल 11. बुरी इच्छाएँ

चित्रलिखित-सी मैं 'माया' और 'छाया' के इस अनूठे खेल को भर-भर आँखों देखती जा रही थी। प्रकृति जैसे मुझे सयानी[12] बनाने के लिए जीवन रहस्यों का उद्घाटन करने पर तुली हुई थी।

धीरे-धीरे धुंध की चादर थोड़ी छँटी। अब वहाँ पहाड़ नहीं, दो विपरीत दिशाओं से आते छाया-पहाड़ थे और थोड़ी देर बाद ही वे छाया-पहाड़ अपने श्रेष्ठतम रूप में मेरे सामने थे। जीप थोड़ी देर के लिए रुकवा दी गई थी। मैंने गर्दन घुमाई...सब ओर जैसे जन्नत[13] बिखरी पड़ी थी। नज़रों के छोर तक खूबसूरती ही खूबसूरती। अपने को निरंतर दे देने की अनुभूति कराते पर्वत, झरने, फूलों, घाटियों और वादियों के दुर्लभ नज़ारे! वहीं कहीं लिखा था...'थिंक ग्रीन।'

आश्चर्य! पलभर में ब्रह्मांड में कितना कुछ घटित हो रहा था। सतत प्रवाहमान झरने, नीचे वेग से बहती तिस्ता नदी। सामने उठती धुंध। ऊपर मँडराते आवारा बादल। मद्धिम-मद्धिम हवा में हिलोरें लेते प्रियुता और रूडोडेंड्रो के फूल। सब अपनी-अपनी लय तान और प्रवाह में बहते हुए। चैरवेति-चैरवेति[14]। और समय के इसी सतत प्रवाह में तिनके-सा बहता हमारा वजूद[15]।

पहली बार अहसास हुआ...जीवन का आनंद है यही चलायमान सौंदर्य।

संपूर्णता के उन क्षणों में मन इस बिखरे सौंदर्य से इस कदर एकात्म हो रहा था कि भीतर-बाहर की रेखा मिट गई थी, आत्मा की सारी खिड़कियाँ खुलने लगी थीं...मैं सचमुच ईश्वर के निकट थी। सुबह सीखी प्रार्थना फिर होठों को छूने लगी थी...साना-साना हाथ जोड़ि...कि तभी वह अतींद्रिय संसार खंड-खंड हो गया! वह महाभाव सूखी टहनी-सा टूट गया।

दरअसल मंत्रमुग्ध-सी मैं तंद्रिल अवस्था में ही थोड़ी दूर तक निकल आई थी कि अचानक पाँवों पर ब्रेक सी लगी...जैसे समाधिस्थ भाव में नृत्य करती किसी आत्मलीन नृत्यांगना के नुपूर अचानक टूट गए हों। मैंने देखा इस अद्वितीय सौंदर्य से निरपेक्ष कुछ पहाड़ी औरतें पत्थरों पर बैठीं पत्थर तोड़ रही थीं। गुँथे आटे-सी कोमल काया पर हाथों में कुदाल और हथौड़े! कईयों की पीठ पर बँधी डोको (बड़ी टोकरी) में उनके बच्चे भी बँधे हुए थे। कुछ कुदाल को भरपूर ताकत के साथ ज़मीन पर मार रही थीं।

इतने स्वर्गीय सौंदर्य, नदी, फूलों, वादियों और झरनों के बीच भूख, मौत, दैन्य और ज़िंदा रहने की यह जंग! मातृत्व और श्रम साधना साथ-साथ। वहीं पर खड़े बी.आर.ओ. (बोर्ड रोड आर्गेनाइजेशन) के एक कर्मचारी से पूछा मैंने, "यह क्या हो रहा है? उसने

12. समझदार, चतुर 13. स्वर्ग 14. चलते रहो, चलते रहो 15. अस्तित्व